4

पुतलियाँ पाठ पढ़ाती हैं

ऊषा द्विवेदी*

कठपुतली कला बहुत पुरानी कला है। इसका प्रयोग गली-मोहल्लों में या राजदरबार में नृत्य, खेल-नाटक दिखाने के लिए होता था। इस कला को यदि शिक्षण एवं पाठ्यक्रम से जोड़ दिया जाए तो इसके अभूतपूर्व परिणाम सामने आते हैं। कैसे?, जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

प्राचीन काल से ही कठपुतली के खेल गाँव-गाँव, नगर-नगर, गली-गली, राजदरबार और धार्मिक स्थलों आदि पर प्रदर्शित होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं। आज भी कठपुतलियों के नृत्य की प्रथा मंच पर दिखाने की परंपरा अनेक देशों में है।

पुतलीकला संप्रेषण का सरल और सशक्त माध्यम है। हम इसके माध्यम से अपनी बात कह सकते हैं। कक्षा में पुतली का प्रयोग समझ विकसित करने के साथ-साथ कला एवं संस्कृति से भी अवगत करवाता है। यह संप्रेषण का स्पष्ट, मनोरंजक, खेल-खेल में सीखने और कुछ करके सीखने का सुंदर और आकर्षक साधन है। इसके माध्यम से हम विद्यार्थियों को अहमियत देकर उनकी आत्माभिव्यक्ति को व्यक्त करने का हुनर सिखा सकते हैं। इससे कक्षा के प्रत्येक बच्चे को कुछ करने का अवसर मिलता है। इस कला के उपयोग से विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच में ऐसा रिश्ता कायम होता है जिसमें डर, क्रोध और अरुचि के लिए कोई स्थान नहीं रहता।

पुतली कला के इन्हीं फायदों को दृष्टिगत रखते हुए मन में यह विचार आया कि क्यों न इस परंपरा को पाठ्यपुस्तकों से जोड़कर शिक्षण को रोचक बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाए। छोटे बच्चे खिलौनों द्वारा नाना प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं। वे स्वेच्छानुसार खिलौनों को नाटकीय रूप देकर अपना मन बहलाते हैं तो क्यों न इन खेल-खिलौनों (पुतलियों) को शिक्षा से जोड़ा जाए ताकि पढ़ना उनके लिए बोझिल और उबाऊ न रहे।

पिछले सत्र में हमने अपने विद्यालय में पुतली कला को पूरी तरह से पाठ्यपुस्तकों से जोड़ दिया और आज तक हम इस क्षेत्र में

* *हेड मिस्ट्रेस*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., कैंपस, नयी दिल्ली-110 016

प्रयोग कर रहे हैं जो कि अत्यंत सफल हुए हैं। यूँ तो कठपुतली कला से सभी परिचित हैं किंतु प्राथमिक कक्षाओं में कठपुतली कला को भिन्न-भिन्न खेलों के माध्यम से जोड़ दिया जाए तो इसके अभूतपूर्व परिणाम सामने आएँगे। सबसे पहले कक्षा में बच्चों को तीन या चार समूहों में बाँट दें। एक या दो समूहों को कठपुतली बनाने का काम सिखाएँ, एक समूह को पाठ को नाटक में बदलने का काम सिखाएँ और एक समूह को कठपुतली प्रदर्शन करना सिखाएँ। विद्यार्थी अपनी-अपनी योग्यता के हिसाब से समूहों में चले जाएँगे। लेखन कला में रुचि रखने वाला विद्यार्थी पाठ का चयन करके नाटक के संवाद लिखेगा। पुतली निर्माण समूह व्यर्थ सामग्री (Waste material) से पुतलियों का निर्माण करेगा। इसमें पुरानी शीशियाँ, डिब्बे, फ्यूज बल्ब, झाड़ू की सींक, बिजली की तार, टूटे हुए खिलौने, गिलास, चम्मच, कप, रस्सी के टूकड़े, जूतों के लेस, गत्ते, पुरानी ऊन, अखबार, चार्ट आदि का प्रयोग किया जा सकता है। पुतलियाँ कई प्रकार की होती हैं जैसे– अँगुलियों द्वारा चलाए जाने वाली पुतलियाँ, हाथ पुतली, कागज़ के थैले की पुतलियाँ और छड़पुतली (rode or stick puppet) आदि। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1. दस्ताना पुतली

दस्ताना पुतली कपड़े और चार्ट से बनती है और हाथ में पहनकर चलाई जाती है। उपरी हिस्से में पुतली का मुखौटा बना होता है चालक का हाथ पुतली के अंदर होता है और उसे प्रत्यक्ष निर्देशन देते हुए चालक संचालित करता है। ये पुतलियाँ दोनों हाथों में पहनकर भी चलाई जा सकती हैं। दो पात्रों की बातचीत के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। इसमें बारी-बारी से दोनों हाथ चलते हैं।

2. उँगलियों द्वारा चालित पुतलियाँ

उँगलियों द्वारा चलाई जाने वाली पुतलियाँ सबसे आसान हैं। बच्चे अपनी उँगलियों पर मोटा चार्ट या गत्ता लपेटकर नली बना लेते है और उसका सिर बनाने के लिए अखबार को कुचलकर समेटकर सिर बना लेते है फिर इसे नली के उपर लगा देते हैं चारों तरफ से दबाकर इसे एक शक्ल दे दी जाती है। और इसे गोंद से चिपका दिया जाता है। फिर इस पर चेहरा और बाल आदि बना दिए जाते है। एक उँगुली द्वारा चालित पुतली बच्चों को कहानी और कविता सुनाने के प्रयोग में लाई जाती है। कहानी के पात्र बहुत जल्दी बनाकर उँगुलियों पर नचाकर कक्षा में दिखाए जा सकते हैं।

3. कागज़ के थैले की पुतलियाँ

कागज़ के थैले से पुतलियाँ बनाने का एक आसान तरीका है। इन्हें हम हाथों में दस्तानों की तरह पहन लेते हैं। लिफाफे के सिर पर शेर, खरगोश, बिल्ली, कुत्ता, हाथी और आदमी आदि की पुतलियाँ बना सकते हैं और हाथों में पहनकर घुमा-घुमा कर इनका संचालन करते हुए कहानी या कविता कहते हैं।

4. छड़ पुतली

यह कला बहुत छोटे बच्चों के साथ अभिनय या नाटकों के लिए उपयोग की जाती है। बच्चों को अपना अभिनय खुद करने के बजाय उन्हें इस आसान मनोरंजक पुतलियों के द्वारा अपना अभिनय करने का मौका देना चाहिए। इसमें किसी गत्ते या कपड़े पर बनाए गए खिलौने को छड़ी के साथ-जोड़ दिया जाता है और छड़ पकड़कर इसे चलाया जाता है।

हमारे विद्यालय में शिक्षकों ने स्वयं सीखकर बच्चों के साथ मिलकर कक्षा-कक्ष में बच्चों के मानसिक स्तर के अनुसार बच्चों से ही पुतलियाँ बनवाई। बच्चे और शिक्षक आपस में बहुत अच्छी तरह घुल-मिल गए। कठपुतलियों के प्रयोग के बाद बहुत अच्छे परिणाम सामने आए। उसमें खास बात ध्यान रखने की यह है कि कक्षा में पुतली बनाने की सामग्री उपलब्ध करवाई जाए। इसमें ज़्यादा मँहगी सामग्री का इस्तेमाल नहीं होता। पुतली बनाने के लिए अखबार, प्लास्टिक के डिब्बे आदि व्यर्थ सामग्री का इस्तेमाल कर सकते है।

पुतलियाँ बनाने से रँगने तक, कपड़े एवं जेवर पहनाने तक का कार्य बच्चे कक्षा में उत्साह और लगन के साथ करते हैं। शिक्षक इन प्रक्रियाओं में छात्रों की मदद करता है। पुतली का प्रयोग बहुत कारगर सिद्ध हुआ है। बच्चों के लिए तो यह एक खिलौना है। पाठ चाहे काव्यात्मक हो या कथात्मक हो पुतलियों के माध्यम से पढ़ाना कक्षाओं में बहुत ही सफल हुआ है। इतना ही नहीं गणित एवं विज्ञान की कक्षाओं में भी इनका प्रयोग सफल रहा है। कक्षा चौथी और पाँचवीं के बच्चे तो छोटे-छोटे नाटक लिखकर पुतलियों के माध्यम से प्रस्तुत करने में बहुत उमंग और उत्साह दिखाते हैं। एक ऐसी स्थिति आती है कि बच्चे इतने निपुण हो जाते है कि विषय-वस्तु को समझकर स्वयं ही पुतलियों का खेल-खेलने लगते हैं। कक्षा पाँचवीं के बच्चे ने तो पृथ्वी, सूरज, चाँद, सितारे, पानी, हवा आदि की प्रतीक पुतलियाँ बनाकर जमा, घटा, भाग और गुणा के पेचीदे फार्मूलों को अभिनीत कर गणित जैसे विषय के पाठों को रुचिकर एवं मनोरंजक बनाया। हमारे विद्यालय में पुतली के निर्माण के लिए Art and Craft के कालांशों का इस्तेमाल किया जाता है। कभी-कभी दो या तीन घंटे की पुतली बनाने की कार्यशाला (Puppetry making workshop) का आयोजन किया जा सकता है। हमने इस प्रकार की कार्यशालाओं को ''बालमेला'' का नाम देकर अपने विद्यालय में आयोजन किया। इन कार्यशालाओं में शिक्षकों की देख-रेख और निर्देशन में पुतलियों का निर्माण बच्चे खुश होकर करते हैं। पूरे साल में लगभग इस पद्धति को विद्यालय में प्रयोग करने पर लगभग एक सत्र पर दस हज़ार का खर्चा आता है।

अपने विद्यालय में इस कला का प्रयोग करने पर हमने महसूस किया कि ये कला प्रत्येक बच्चे में सीखने के प्रति रुचि का माहौल उत्पन्न करती है। पुतली नाटकीकरण बच्चों के दिलों दिमाग पर छा जाता है और

पाठ स्वत: ही उनकी समझ में आ जाता है। हमने देखा कि हमारी क्रिया-कलाप अध्यापिका जो इस कला में पारंगत हैं बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं। भाषा हो या ज्ञान-विज्ञान, गणित हो या भूगोल सभी विषयों को उन्होंने इस कला से जोड़कर बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जाग्रत की। कक्षा शिक्षण में इसके प्रयोग से अन्य लाभ भी हैं।

यदि इस कला में कुछ बच्चों में रुझान या दिलचस्पी पैदा हो जाती है तो यह भविष्य में उनकी आजीविका का साधन बन सकती है। पढ़ाई कर्म प्रधान हो, जीवन प्रधान हो यही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। किताबों से छात्रों को आवश्यक ज्ञान मिलता है किंतु इस क्रिया के माध्यम से शिक्षक उनमें समझ का चस्का लगा सकते हैं। इनके प्रयोग से हमने पाया कि बच्चों की बहुत सारी प्रवृतियाँ, अभिव्यक्तियाँ, रुचियाँ उजागर होती हैं। कुछ अभिव्यक्तियाँ तो ऐसी सामने आईं जिनके बारे में शिक्षक ने सोचा भी नही था। कहीं-कहीं इस विद्या में बच्चे ही आगे निकल गए और शिक्षक पीछे रह गए। तात्पर्य यह है कि बच्चों में ऐसी अनेक कलाएँ छिपी हैं जिनको अगर थोड़ा-सा भी सहारा दिया जाए तो वह निखर कर बाहर आएँगी और शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया में एक अनूठा चमत्कार पैदा करेंगी। शिक्षक के लिए यह कार्य कतई कठिन नहीं है बस आवश्यकता है तो शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन की।